INNOVATIONS BY FARMERS

MANUAL SEED DRILL FOR SOWING INTERCROPS IN SUGARCANE

DRIP SYSTEM BY USE OF DISPOSABLE SYRINGES

INTRODUCTION OF DSR IN DISTRICT

APPLE PLANTS ON TRIAL BASIS

STARTED A PROJECT OF AROMATIC PLANTS NEAR FOREST AREA WITH THE HELP OF NABARD

नाबार्ड ने राजकीय कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से तैयार किया किसानों के लिए प्रोजेक्ट

लेमनग्रास व सिस्ट्रोनेला बढ़ाएगा किसानों की आमदनी

DJ-18.7.19

जागरण संवाददाता, पीलीभीत : किसानों का आय बढ़ाने के लिए नाबार्ड ने राजकीय कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से सगंधी फसलों की खेती को प्रोत्साहन देने के लिए प्रोजेक्ट तैयार किया है। इसका पहला प्रयोग पूरनपुर क्षेत्र के गांव ढक्का चांट में किया जा रहा है। इस गांव के इक्का-दुक्का प्रगतिशील किसान पहले ही सगंधी फसलों की खेती करने की ओर कदम बढ़ा चुके हैं। खास बात यह है कि जिन किसानों को इसके लिए चयनित किया गया, उन्हें पूरे एक साल तक लागत का खर्च नाबार्ड मुहैया कराएगा। इस गांव में पच्चीस किसान फिलहाल पचपन एकड़ क्षेत्रफल में इन दोनों फसलों की खेती करेंगे। ढक्का चांट का चयन इसलिए किया गया कि यह इलाका तीन तरफ से जंगल से घिरा हुआ है। जंगली जानवर अक्सर यहां किसानों की फसलों को नुकसान पहुंचाते रहे हैं। सगंधी फसलों की विशेषता यह है कि जंगली जानवर इनके खेतों की ओर रुख ही नहीं करेंगे।

एक बार पौध लगाएंगे और चार साल काटेंगे फसल : लेमग्रास व सिस्ट्रोनेला की पौध एक बार खेत में लगानी होगी और किसान चार साल तक इसकी फसल हासिल करेंगे। साल भर में तीन बार यह फसल काटी जाती है। फसल की कटाई के बाद इन दोनों किस्मों की घास से तेल की निकासी कराई जाएगी। यह तेल देश-विदेश में बिकेगा।

पीलीभीत के गांव ढक्का चांट में किसानों को सगंधी फसलों की जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक व गांव में एक किसान के खेत में लगी लेमनग्रास • जागरण

> यह प्रोजेक्ट प्रयोग के तौर पर इस गांव में शुरू कराया जा रहा है। जब इन किसानों को फायदा मिलेगा तो दूसरे किसान भी इसके लिए प्रेरित होंगे। नाबार्ड का उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना है। गेहूं व धान की परंपरागत खेती की अपेक्षा इसमें आय ज्यादा होगी।
> **सुब्रत दत्ता,** डीडीएम नाबार्ड

तेल निकालने का प्लांट लगाने में 75 फीसद मिलेगा अनुदान : इन पच्चीस किसानों का समूह अगर इन फसलों की कटाई के बाद तेल निकालने के लिए अपना अलग प्लांट लगाना चाहे तो नाबार्ड प्रोत्साहन के तौर पर लागत की 75 प्रतिशत धनराशि अनुदान के रूप में देगा। प्लांट की लागत चार लाख है, इसमें से तीन लाख का अनुदान और एक लाख रुपये इन किसानों को आपस में एकत्र करने होंगे। इन किसानों को प्रति पौध दो रुपये के साथ ही खाद, सिंचाई पर आने वाला एक साल तक का खर्चा भी नाबार्ड देगा।

जागरण विशेष

कवायद

- सगंधी फसलों वाले किसानों को साल भर मिलेगा लागत का खर्च
- सगंधी फसलों को नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे जंगली जानवर

> इन दोनों फसलों से किसानों को पहले साल 70 हजार रुपये की बचत होगी। इसके बाद 1.20 से 1.50 लाख रुपये सालाना की आमदनी होने लगेगी। धान और गेहूं की फसलों से किसानों को फिलहाल साल भर में 55 से 60 हजार रुपये तक की ही आय हो पाती है। जो कारोबारी इन फसलों के तेल का व्यापार करते हैं, उन्हें बुलाकर किसानों से मिलवा दिया गया है। ऐसे में फसल के विपणन की कोई समस्या नहीं आएगी। जब तक इनका अलग से तेल निकालने वाला प्लांट नहीं लगता, तब तक मैंथा प्लांट के माध्यम से तेल निकालने का कार्य कराया जाएगा।
> **डॉ. शैलेंद्र सिंह ढाका,** वरिष्ठ वैज्ञानिक राजकीय कृषि विज्ञान केंद्र

GROWING OF SUGARCANE SEEDLINGS IN COCOPIT TO SAVE TIME

कोकोपिट नर्सरी विधि बढ़ाएगी गन्ने की पैदावार

अच्छी पहल : ट्रे में गन्ने की आंख रोपकर तैयार होगी पौध, बुआई का खर्च भी होगा आधा

फखरुल इस्लाम

पीलीभीत। शरदकालीन गन्ने की बुआई 20 अक्तूबर तक बेहतर मानी जाती है। मगर, धान की फसल कटने से गन्ना बुआई में किसान लेट हो जाते हैं। इसका असर गन्ने के उत्पादन पर पड़ता है। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों की यह समस्या दूर करने के लिए कोकोपिट नर्सरी विधि से गन्ने की पैदावार बढ़ाने का रास्ता खोजा है। इसमें मौसम की अनिवार्यता और बुआई की समय सीमा पर प्रतिबंध नहीं है। गजरौला के महुआ में रहने वाले प्रगतिशील किसान बाज सिंह ने चार एकड़ में कोकोपिट नर्सरी तकनीक से गन्ने की पौध तैयार करनी शुरू की है। यह गन्ना एक महीने बाद यानी दिसंबर तक खेत में बोया जा सकता है। इस विधि से गन्ने की बुआई का खर्च आधा हो जाएगा और गन्ने की पैदावार भी कम नहीं होगी बल्कि बढ़ेगी।

तराई में गन्ने की फसल को किसान सबसे अधिक महत्व देते हैं। साल में गन्ने की दो फसलें होती हैं। पहली बसंतकालीन और दूसरी शरदकालीन। बसंतकालीन के मुकाबले शरदकालीन गन्ने की उपज अधिक होती है। गन्ना किसान भी इस फसल पर अधिक ध्यान देते है। शरदकालीन गन्ने में 20 अक्तूबर तक गन्ने की बुआई का बेहतर समय माना जाता है। इस समय 26-29 डिग्री सेल्सियस तापमान होता है, जो गन्ना बुआई के लिए उपयुक्त है, लेकिन खेतों में धान की फसल खड़ी होने से किसान उसे काटने में उलझ जाते है। इससे गन्ना बुआई का समय निकल जाता है। इसके चलते अगर किसान शरदकालीन गन्ने की बुआई नवंबर तक करते हैं तो उनकी फसल की पैदावार घट जाती है। इसको ध्यान में रखते हुए राजकीय कृषि वैज्ञानिक ने नया तरीका कोकोपिट नर्सरी विधि से गन्ना बुआई का तरीका निकाला है। गजरौला के महुआ गांव में रहने वाले प्रगतिशील किसान बाज सिंह ने चार एकड़ एरिया में गन्ने की पौध लगाई है। इस पौध से किसान गन्ने की बुआई दिसंबर तक कर सकेंगे।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. एसएस ढाका के मुताबिक कोकोपिट नर्सरी विधि गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए बहुत उपयोगी है। शरदकाल में किसान इस विधि से गन्ना बुवाई कर सकते हैं। इसमें गन्ने के टुकड़े का उपयोग न कर केवल आंख का ही इस्तेमाल किया जाता है। बुवाई खर्च भी सामान्य विधि से आधा हो जाता है।

गजरौला के गांव महुआ में तैयार हो रही गन्ने की पौध। संवाद

डॉ. एसएस ढाका।

गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए यह सर्वोत्तम विधि है। गजरौला में चार एकड़ खेती में इस विधि से पौध भी तैयार की गई है। इससे बुआई का खर्च कम होने से साथ फसल की पैदावार भी बढ़ेगी। किसान भी जागरूक होंगे।

डॉ. शैलेंद्र ढाका, वरिष्ठ वैज्ञानिक, राजकीय कृषि विभान केंद्र

बुआई का तरीका

कोकोपिट नर्सरी विधि से गन्ने की पौध तैयार की जाती है। एक ट्रे में मिट्टी जमा कर गन्ने की आँख को रोप दिया जाता है। एक माह में पौध तैयार हो जाती है। खेत खाली होने पर किसान पौध को ट्रे से निकालकर खेत में रोप सकते हैं।

बुआई के फायदे

- प्रति एकड़ खेत में 4800 पौधों की जरूरत होती है। 2.5 क्विंटल बीज लगता है।
- पौधे के अवागमन का खर्च सामान्य विधि से आधा है।
- ढाई कुंतल के बीजोपचार में केवल पांच रुपए का खर्च।
- 100 प्रतिशत अंकुरित पौधे लगते हैं। खेत में खाली जगह नहीं छूटती
- जहां पर पौधा लगा होता है, वहीं खाद डाली जाती है। खाद का उपयोग सीमित हो जाता है।
- नया बीज एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना आसान होता है।
- एक आंख से प्रति पौधा कंसों की संख्या अधिक होती है।
- ट्रे नर्सरी में गन्ने की उम्र डेढ़ महीने अधिक मिल से पैदावार बढ़ती है।

नर्सरी विधि से गन्ना रोपाई करना है ज्यादा फायदेमंद

नर्सरी विधि से गन्ना बुवाई का तरीका बताते कृषि वैज्ञानिक

DJ 6-11-19

जागरण संवाददाता, पीलीभीत : खेतों की मिट्टी में तीन आंख के गन्ने के टुकड़े डालकर बुवाई करने के ज्यादा फायदेमंद है इसकी नर्सरी तैयार करके खेतों में पौधे रोपने का तरीका। इससे न सिर्फ किसान की लागत कम होती है बल्कि पैदावार भी दोगुनी से अधिक प्राप्त की जा सकती है। नर्सरी तैयार करके पौधे रोपने पर गन्ने की बढ़वार भी तेजी से होती है, इसी वजह से उपज बढ़ जाती है।

तराई के जिले में औसतन एक लाख हेक्टेयर भूमि पर गन्ने की खेती की जाती है। गन्ने की शीतकालीन बुवाई अक्टूबर में और वसंतकालीन बुवाई फरवरी के अंत तक किया जाना बेहतर माना जाता है। अभी तक ज्यादातर किसान धान की कटाई के बाद खाली हुए खेतों में शरदकालीन गन्ने की बुवाई तीन या चार आंख वाले गन्ने के टुकड़ों से करते रहे हैं। इन टुकड़ों को खेतों की मिट्टी के नीचे दबा दिया जाता है। इसमें 35 से 40 प्रतिशत तक गन्ने की आंख से पौधा निकल पाता है। शेष गन्ना जमीन के अंदर ही सड़कर नष्ट हो जाता है। गन्ना किसानों की लागत घटाने और पैदावार बढ़ाने का फार्मूला राजकीय कृषि विज्ञान ने तैयार कर लिया है। इस फार्मूले से धान के खेत खाली होने से पहले ही गन्ने की सिर्फ आंख निकालकर उसे कोकोपिट (एक तरह की ट्रे) में मिट्टी के साथ जमा दिया जाता है। इससे गन्ने की नर्सरी तैयार होने लगती है। धान कटाई के बाद खेत को तैयार करके गन्ना की यही पौध रोप दी जाती है। पौधा मजबूत रहता है। बढ़वार भी अच्छी रहती है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार शरदकालीन गन्ना बुवाई का समय बीस अक्टूबर तक सबसे ठीक रहता है।

खेतों में गन्ने के टुकड़े बोने की बजाय नर्सरी तैयार करके पौधे रोपना ज्यादा फायदेमंद है। इससे समय पर गन्ना बुवाई भी हो सकती है। पैदावार भी अधिक हो सकती है। जिले में नर्सरी तैयार कर गन्ना पौध लगाना किसानों को काफी फायदेमंद है। अभी एक प्रगतिशील किसान के खेत पर यह प्रयोग किया है। इसका प्रदर्शन करके अन्य गन्ना किसानों को दिखाएंगे, जिससे वे इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित हो सकें।

डॉ. शैलेंद्र सिंह ढाका, वरिष्ठ वैज्ञानिक राजकीय कृषि विज्ञान केंद्र